Str. 582, 23. Calc. Ausg. म्रासिकाधः सुचिवुकं । — 24 — 26. Die Scholien: गङ्गाद्यस्त्रया ज्लपविशेषवादेकार्या इत्येके ।

Str. 583, 30. Calc. Ausg. देशा।

Str. 584, 33. Die Scholien: क्वचिदिति मतात्तरे। वैजयत्तीकारकस्तु। मध्यदत्ता राजदत्ता दंष्ट्रातत्पार्श्वयोर्द्वयोरिति चतुरा राजदत्तानात् ।

Str. 585, 36. Calc. Ausg. E. und die Scholien: सुवाश्रवा।

Str. 586, 37. Calc. Ausg. धमानियोवा।

Str. 588, 46. Die Scholien: भुतशाबर्माप।

Str. 589, 48. Calc. Ausg. und die Handschriften: प्रविद्धा, die Scholien: प्रविद्धा प्रवेष्ट: 1 — 50. Calc. Ausg. und die Handschriften: कता, der Scholiast bemerkt aber ausdrücklich, dass das Wort männlichen und sächlichen Geschlechts sei.

Str. 590, 52. Calc. Ausg. कार्यश्चा, die Scholien: कूर्पर: कुर्परा कृपि।

— 53. Calc. Ausg. und D. versetzen die Worte स्यात्प्रकाष्ठः।

Str. 591, 54. Calc. Ausg. und D. कूर्पर्यातः, die Scholien = कूर्परांसमध्यम् — 55. Calc. Ausg. und D. समाः, E. समः, die Scholien: शाम्यति शमः। — 56. 57. Calc. Ausg. und E. कर्रयादा, B. करः  $\sqrt{2}$  स्यादा, D. करे। स्यादा।

Str. 592, 59. Calc. Ausg. und die Handschriften: कर्शाखाङ्गुली।
— 60. Calc. Ausg. मङ्गुलिश्च, B. मङ्गुरी च, die Scholien: करस्य शाखेव
कर्शाखा। मङ्गल्यङ्गरिः। लवे छा च मङ्गुली।

Str. 594, 67. Die Scholien: कर्° या॰ पाणितकरुहन्हाद्य: ।

Str. 595, 70. Die Scholien: वितस्ति = द्वार्शाङ्गल ।

Str. 596, 72. Calc. Ausg. und D. तालिक्स, die Scholien wie